आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 2/जून 2024

Received: 10/06/2024; Accepted: 14/06/2024; Published: 26/06/2024

विस्थापितो' की पीडा : पत्थलगडी कविता संकलन के विशेष सन्दर्भ में

- **डॉ.उषस.पी.एस**
सहायक प्राध्यापक
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
एर्णाकुलम, केरल – 682016
मोबाइल :-8089457107
ईलेम :-drushusps3@gmailcom

डॉ.उषस.पी.एस, **विस्थापितो' की पीडा : पत्थलगडी कविता संकलन के विशेष सन्दर्भ में** ,आखर हिंदी पत्रिका खंड 4/अंक 2/जून 2024 ,(114- 119)

आदिवासी समाज एक विशिष्ट समाज है। उनकी अपनी अलग सामाजिक व्यवस्था होती है। इनका प्रकृति के साथ अटूट संबंध हैं। इसलिए इनको प्रकृति की सन्तान कहा जाता हैं। किंतु दुखद बात यह है कि समय के बदलाव और राजनैतिक परिवर्तन के साथ आज वे मुख्य धारा समाज के चालाकियो के शिकार भी हो चुके हैं ।यूँ कहूँ तो मनुष्य द्वारा की गयी प्राकृतिक दोहन के शिकार हो चुके है।भूमंडलीकरण की प्रवृत्ति ने आदिवासी समाज को बुरी तरह से प्रभावित किया हैं। आधुनिकीकरण के नाम पर जो परियोजनाएँ (सडक,रेल,बांध निर्माण ,मिट्टी की खुदाई) आदिवासी क्षेत्रो में की गयी थी, जिससे प्रकृति की संरचना भी अव्यवस्थित हो गयी। वहाँ रहनेवाले प्राकृतिक संसाधनो से आजीविका चलाने वाले निरीह जनता अपने जीवन का निर्वाह करने में,आज अनेक संघर्षो का सामना कर रहे हैं।फलस्वरूप आज आदिवासियो की प्रभुता नष्ट हो रही है।वे अपना अस्तित्व बचाने में असमर्थता का अनुभव कर रहे हैं। समय के साथ मुठभेड करना समकालीन कविता की खास विशेषता रही है ।समकालीन प्रतिबद्ध कवि भी अपने अनुभव जगत को यथार्थ के साथ अभिव्यक्त करने में हमेशा तत्पर रहते है।समकालीन युवा कवि अनुज लुगुन ने 'पत्थलगडी' नामक अपने काव्य संकलन के माध्यम से अपने समाज की ,विस्थापन से उपजी विभिन्न समस्याओ और चुनौतियो की ओर संकेत करने के साथ साथ आदिवासियो में प्रतिरोध की चेतना भरने का प्रयास किया है।

बीज शब्द:

भूमंडलीकरण,विस्थापन,आदिवासी,कारपोरेट,परियोजना,पत्थलगडी,प्राकृतिक संसाधन

मुख्य लेख:

विस्थापन की समस्या वर्तमान समय की ज्वलंत एव गम्भीर समस्या है। अन्य साहित्यिक विधाओ की भांति समकालीन कविता ने भी इसी समस्या को विशेष महत्व दिया है। हिंदवी शब्द कोश के अनुसार विस्थापन का अर्थ है " किसी स्थान पर बसे हुए लोगो को कही से, बलपूर्वक हटाना और वह जगह उनसे खाली करा लेना(डिस्प्लेसमेंट)"1 और "विस्थापित का अर्थ है-डिस्प्लेस्ड(हटाया गया) "। 2 आदिवासी इलाका प्राकृतिक संसाधनो का धरोहर है।किन्तु आज वे अपने विरासत से मिली ज़मीन से निष्कासित हो चुका हैं।इस दुस्सह स्थिति पर विचार करते हुए श्री प्रमोद मीणा कहते है कि "आर्थिक विकास और शहरीकरण के दबाव में अपनी ज़मीन से बलात हटाये जाते ये आदिवासी अंतहीन त्रासदियो के दुष्चक्र में फँसे जाते है। भूमिहीन होकर ,गृहहीन होकर ये दर-दर की ठोकरे खाने को मजबूर हैं। उनकी सारी सामाजिक संरचना ही छिन्न भिन्न हो रही है।अपने पशुओ को चराने के लिए आज उनके पास अपने पूर्वजो की सामुदायिक गोचर भूमि नहीं हैं। उनके पुरखो की समाधिया विकास के पहिए के नीचे रौंदी जा रही है"।3 आर्थिक विकास के नाम पर बडे बडे व्यावसायिक संगठनो ने अपनी व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए आदिवासी इलाको को कब्जा करके वहाँ पुल,बांध ,रेल ,सड़क आदि के निर्माण करके आदिवासी समाज का शोषण किया है।अपना निवास स्थान नष्ट होने के कारण इनका आर्थिक पक्ष कमज़ोर हो गया है। आर्थिक सुदृढता और शैक्षिक प्रवीणता न होने के कारण आज इन लोगो का जीवन नारकीय बन गया है। " तमाम विकास परियोजनाओ से आदिवासियो को भूख और विस्थापन के अलावा कुछ नहीं मिला है। अकेले झारखंड राज्य में पिछले एक दशक में विभिन्न परियोजनाओ के चलते कम से कम दस लाख लोग विस्थापित हो चुके हैं "।4 इस प्रकार देखा जाये तो मौजूदा समाज के सामने सामाजिक,आर्थिक,संस्कृति,पर्यावरण से जुडी असंख्य समस्याएँ और चुनौतियाँ हैं।

सहजीविता का पाठ सिखाने वाले समाज शरणार्थियो की तरह वर्तमान समय में गाव गाव जंगल जंगल अपने अस्तित्व के लिए भडक रहे है। उनके पास न संपत्ति है न परिवार जन।आज वे अपना पहचान तक खो दिए। कवि कहते है-

" पगडंडियो पर चलते हुए /आंखो में उगता है लाल कार्ड/

गरीबी और भूख के पहचान पत्र/हमारे झोले से झांकता है

बिना पहचान पत्र के / कोइ काम नहीं होता है/भूख को भी चाहिए होता है/

एक कार्ड"।5 (लाल कार्ड-पृ.सं 34)

सभ्य समाज के लिए ए टी एम कार्ड,क्रेडिट कार्ड,डेबिट कार्ड आदि उनके सामाजिक क्षमता, गौरव,आर्थिक सुदृढता का सूचक है। किंतु जनजातीय समाज इस तरह के कार्ड से गौरव का अनुभव नहीं कर पाते है ,वे अपना पहचान खो जाने से उत्पन्न पीडा से घुटन महसूस करते है।

विस्थापित होकर देश के अलग अलग जगह में पहुंचने वाले अपनी नागरिकता को लेकर व्याकुल रहते हैं। ज़मीन के बदले ज़मीन या नौकरी देने की वादे देकर सत्ताधारी वर्ग आदिवासी लोगो से उनके ज़मीन हडप

लेते है। लेकिन कोइ वादे वे नहीं निभाते हैं।आदमी की दर्जा तक नहीं देते है । और उनके साथ अमानवीय व्यवहार करते है।'मुझे मेरी नागरिकता दे दो' कविता राजनैतिक लोगो के साजिशो का पर्दाफाश करती है। आदिवासियो का कोइ जाति नहीं है। उनकी अपनी परम्पराएँ होती हैं। किंतु धर्म के नाम पर आज इन लोगो का शोषण करते है। सरकार उन पर अनेक दबाव डालते है। कवि कहते है कि -

"मैं हिंदु हूँ ,बौद्ध हूँ ,/ईसाई हूँ ,पारसी हूँ/मुसलमान हूँ /कोइ भी हूँ

मुझे मेरी सम्मिलित नागरिकता दे दो"6 (मुझे मेरी नागरिकता दे दो-पृ.सं-30)

विस्थापन से आज वे बेघर हो चुके है। ताकतवर लोग उनके आवाज़ को दबाने का हरदम प्रयास करते रहते है।

"मुझे छत दे दो/भात दे दो/लिखने का हाथ दे दो /संविधान में लिखी थी जो धर्म की बात/मुझे वही बात दे दो"।7

कवि कहते है कि भौतिक वादी जीवन दर्शन पर आस्था रखने वाला समाज हमेशा अपने सुख -दुख की,राज-पाट की कामना करते रहेंगे। राज पाट की बाते करते रहेंगे।किंतु विस्थापित अपने जीवन दर्शन ,कुटीर व्यवसाय,शैली,भाषा,त्योहार,लोक गीत यहाँ तक कि अपने पहचान तक को खो दिया है।उनका अस्तित्व खतरे में आ चुका हैं। इस लिए कवि का कहना है कि वे श्रमजीवी लोग है, उन्हे राज-पाट की नहीं ,अपने ही हथियार उठाने का अवसर देना चाहिए।

तुम तो करोगे राज -पाट की बात/ मुझे काम-काज की बात कर लेने दो/कुदाल चला लेने दो/मुझे मेरी श्रमशील नागरिकता दे दो"।8(मुझे मेरी नागरिकता दे दो-पृ.सं-31)

विस्थापन ने आदिवासियो की सहजीविता -जीवन दर्शन को भी प्रभावित किया है। इनके परिवार भी मुख्य धारा समाज की तरह अणु परिवार में बदल रहा है। कवि परिवार के बंट जाने से उत्पन्न पीडा को 'चूल्हो की दुनिया' के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त किया है।

"चूल्हो का बंट जाना/परिवार का बंट जाना था/लोगो का नहीं /चूल्हो का महक/

पडोसियो के घर/आ जा सकती थी/लोग सहज ही जानते थे/चूल्हो की बात /

इसके लिए /मंदिर मस्जिद या,कही भी/चोंगा से बात फैलाने पर/बात नहीं बिगडती थी/चूल्हो की बात पर /लोगो के मुह में/पानी भर जाता था/या लोग नाक सिकोडते थे /लेकिन इससे कभी किसी के देवता नाराज़ नहीं हुए " 9।(चूल्हो की दुनिया -पृ.सं74)

विस्थापित समाज अपने सुख दुखो को आपस में साझा नहीं कर सकते,एक तरह से वे नौकरी की खोज में अपने रिश्तेदारो से अलग, अपने सहजीवियो से दूर हो चुके है। इससे पहले जैसी रागात्मकता अब इनमें नहीं है।

वर्तमान समय में बडे पैमाने पर हो रहे जंगल की कटाई ने प्रकृति की संरचना को नष्ट कर दिया है। इसी के चलते वातावरण और ऋतुओ में भी काफी बदलाव आ चुके है।आज वे अनेक प्राकृतिक आपदाओ का शिकार भी हो रहे है। धरती अब बंजर हो चुकी है । नदी नाले में बहता पानी विषाक्त हो गया है। पूरे आवास व्यवस्था अव्यवस्थित हो चुका है।सरकार की अन्याय पूर्ण भूमि अधिग्रहण के कारण परम्परागत घरेलू धंधो,जल-जंगल पर आश्रित रहने वाले जन जातियो का भविष्य आज अंधकारपूर्ण हो गया है।विस्थापन से उपजी आर्थिक विपन्नता को कवि ने यो चित्रित किया है।–

“लेकिन वे गये मजदूरी के लिए /हज़ारो दूर चेहरे की झुर्रियो को ढोते हुए/

उनकी पत्नियो ने अपने आँचल में फिर से उम्मीद को बांधा /

उन्होने अपने बच्चे को भी साथ जाने दिया/यह पेट का युद्ध है/

और इनमे कोइ अकेले नहीं रह सकता है।“ 10(पचपन बरस की मज़दूरी-पृ.सं-26)

“आदिवासियो को न केवल बडी जल विद्युत परियोजनाओ खनिज संसाधनो के खनन और औद्योगीकरण के नाम पर अपने प्राकृतिक अधिवासो से खदेडा जा रहा है।अपितु उन्हे ही जंगल का शत्रु बताकर पर्यावरण संरक्षण के नाम पर जंगलो से भी भगाया जा रहा है।“8

‘मैं जानता हूँ पुल की हिंसा को’ नामक कविता पुल बनाने वालो की चालाकियो को उजागर करती है।

“मैं एक ठेठ आदिवासी जानता हूँ पुल की हिंसा को

पुल न होते तो इंतज़ार में आंसू मरते हैं/और पुल बनाना हो तो

पुल बनानेवाले /नदी और उसके तैराक को रौंद डालते हैं

हर बरसात में यह पुल ढह जाता है और किनारे के लोग बह जाते हैं।” 11(मैं जानता हूँ पुल की हिंसा को-पृ.सं-101)

अतः नगरीकरण के नाम पर पानी के स्वाभाविक प्रवाह को रोक कर पुल/बांध का निर्माण करते हैं ,किंतु निर्माण की तकनीक ठोस न होने के कारण हर बरसाती मौसम में पुल ढह जाता है। असंख्यो की मृत्यु हो जाती है। दुर्घटनाओ के नाम पर नदी किनारे रहने वालो को वहाँ से हटाया जाता है।इनके पास यदि संपत्ति है तो वे अपना आवास खुद बसा सकते है।परंतु अधिकाधिक लोग विस्थापन के कारण बंजारो का जैसा जीवन व्यतीत करने को अभिशप्त हो गया है।वे अपनी कला का उपयोग भी ठीक तरीके से नहीं कर पा रहे है। मजबूर होकर उन्हे किसान से मजदूर बनना पड रहा है।

अशिक्षित होने के कारण ये लोग अपने अधिकारो से बेखबर रहते हैं। फलस्वरूप समाज के ताकतवर वर्ग, राजनैतिक लोग,अन्य मुनाफा कमाने वाले लोगो के शोषण की चक्की में पडकर आज प्रकृति की संतान अपार पीडा का अनुभव कर रहा हैं। आज उन्हे आत्मसम्मान खोने का दुख कचोट रहा हैं।

उत्सव,नृत्य,लोक गीत ,संगीत,कृषि,पशुपालन,आदि सामाजिकता के नष्ट होने से चौपट हो गया हैं।आज वे गरीबी का प्रतीक बन गया हैं।इस प्रकार अपनी विशिष्ट संस्कृति की रक्षा न कर सकने की पीडा भी दिन ब दिन उन्हे कचोटती रहती हैं।

आर्थिक दृष्टि कमज़ोर हो पाने के कारण आज कल इनका जीवन विसंगतिपूर्ण हो गया हैं।स्त्रियो की ज़िंदगी असुरक्षित हो चुकी है।" इन विस्थापित आदिवासियो में अधिकांश पुरुष आस पास के शहरो में दिहाडी पर काम करते हैं और आदिवासी लडकियाँ और औरते लोगोन के घरो में काम करती है।विस्थापित आदिवासियो को एक तरफ आर्थिक शोषण का सामना करना पडता हैं वही दूसरी तरफ आदिवासी औरतो को शारीरिक शोषण भी झेलना पडता हैं।"12 विस्थापन से हमारे समाज में बेरोज़गारो की संख्या में बढोत्तरी हुई हैं। नौकरी की खोज में देश भ्रमण करने के कारण , नगरीय विषैला वातावरण तथा पौष्टिक आहार के अभाव ने जन जातियो के स्वास्थ्य को बिगाडा है।आज वे कई प्रकार की बीमारियो का शिकार भी हो रहे हैं।

समूहिकता नष्ट होने के कारण अपने निवास स्थान से निष्कासित करके अपनी माटी का दोहन करनेवालो के विरुद्ध लड़ाई लडने की शक्ति भी इन लोगो में कम होती जा रही है ।अतः इनमें अब अपने पूर्वजओ की तरह सघर्ष करने का उत्साह घट रहा है। अधिकार का उल्लंघन करने वाले सत्ताधारियो की साजिशो को समझने का ज्ञान सभी व्यक्तियो में नहीं है।शिक्षा के महत्व से अनभिज्ञ रहने के कारण वे अपने भविष्य तथा अपने सेहत के प्रति चिंतित नहीं है।उन्हे प्रेरित करने के लिए , उनके पास अपने पूर्वजो जैसा शक्तिशाली नेता की कमी है। विस्थापितो को विभिन्न वादे देकर राजनैतिक एक ओर अपना स्वार्थ पूर्ति करते है तो दूसरी ओर विभिन्न धर्मावलम्बी लोग , उनका धर्म परिवर्तन करने का प्रयास करते रहते हैं। इन दोनो के चंगुल में पडकर जन साधारण पिस रहा हैं। निष्कर्ष रुप में कह सकते है कि विस्थापन से उपजी सामाजिक सांस्कृतिक,राजनैतिक , प्राकृतिक समस्याएँ आदिवासी लोगो के चारो तरफ़ फैला हैं ।

अत: इनके सामने अनेक चुनौतियाँ है इससे उबर पाना मुश्किल कार्य है ।फिर भी उचित शिक्षा, स्वास्थ्य,आवास देकर उन लोगो के भविष्य के लिए ,उचित कदम उठानी चहिए। कवि अनुज लुगुन ने पत्थलगडी की कविताओ के ज़रिए अपने समाज में उभर रही नई चेतना जगाने का प्रयास किया है।कविताएँ समय से साक्षात्कार कराती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

a).Book with one author

Lugun Anuj(2021).Patthalgadi

Dilli:Vaani prakashan.

लुगुन अनुज (2021).पत्थलगडी
दिल्ली:वाणी प्रकाशन

b).Chapter in an edited Book

Meena Gangasahai(2021).Aadivaasi Cintan ki Bhoomika

Dilli:Ananya Prakashan

मीणा गंगासहाय (2021).आदिवासी चिंतन की भूमिका
दिल्ली:अनन्य प्रकाशन

c).Lugun.Anuj(2021).Aadivaasi Asmita Prabhutva aur Pratirodh(Ed).

Visthaapan ka Nasoor jhelte Aadivasi(pg.no54)

Dilli: Ananya Prakashan

लुगुन.अनुज(2021).आदिवासी अस्मिता प्रभुत्व और प्रतिरोध अनुज लुगुन द्वारा संपादित,

विस्थापन का नासूर झेलते आदिवासी से (पृष्ठ संख्या-54)

दिल्ली,अनन्य प्रकाशन

****